IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 14, Issue 5 Ser. 3 (Sept. – Oct. 2024), 39-41
www.iosrjournals.org

एक और द्रोणाचार्यः एक मूल्यांकन

डॉ. संदेशा भावसार
एम. एम. पी. शाह महिला
महाविद्यालय
माटुंगा ईस्ट, मुंबई- ४०००१९

लक्ष्मी जायसवाल
एम. ए. भाग. २
महाकाली मंदिर, माहिम ईस्ट,
मुंबई-४०००१७

Date of Submission: 01-10-2024 Date of Acceptance: 10-10-2024

I. प्राक्कथन

मैं एम. ए. प्रथम वर्ष में थी, तब मुझे यह ज्ञात हुआ कि मुझे एम.ए द्वितीय वर्ष में शोध प्रबंध लिखना पड़ेगा और मुझे किसी विषय पर शोध करना रहेगा। जब मैं प्रथम वर्ष में थी, तब मैं छिन्नमस्ता, रंगभूमि, त्यागपत्र उपन्यास, सद्गगति, कफन, दो बैलो की कथा , बलिदान, बूढ़ी काकी कहानी, एवं एक और द्रोणाचार्य , घासीराम कोतवाल, कोमल गंधार, पोस्टर, रक्तबीज, चेहरा, सांझ नाटक पढ़ रही थी।

" काव्येशु नाट्य रम्य: अर्थात् काव्य साहित्य की सभी विधाओं में नाटक विधा सबसे अधिक रमणीय और आकर्षक है। " कोई भी ज्ञान, कोई भी शिल्प, कोई भी विद्या, कोई भी कला, ऐसी जो नाटक में दिखाई ना देता हो ऐसा नहीं है |

मेरी नाटक विधा में रुचि है क्योंकि नाटक दृश्यात्मक, संवादात्मक, वर्णनात्मक और अत्यंत रमणीय होते है। मैं स्वयं कहानी और नाटक लिखती हूँ। इसलिए मैंने शोध प्रबंध के लिए नाटक विधा लेने का निश्चय किया। मैं ऐसा नाटक लेना चाहती थी जो महाभारत कथा पर आधारित हो | अतः मैंने एक और द्रोणाचार्य नाटक को लघुतर शोध प्रबंध के लिए लेने का निश्चय किया |

महाभारत ऋषि वेदव्यास द्वारा रचित है | भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया, (" हे अर्जुन ! तुम्हें धर्म की स्थापना के लिए अपने परिजनों पर शस्त्र उठाना होगा |") धर्म सत्य पर आधारित है जहां धर्म है वहीं सत्य है। महाभारत कथा सत्य पर आधारित है | महाभारत कथा कहीं ना कहीं हमारे वर्तमान जीवन में भी प्रासंगिक है | यही प्रासंगिकता मुझे आकृष्ट करती है |

डॉ शंकर शेष द्वारा रचित " एक और द्रोणाचार्य " नाटक " शैक्षणिक भ्रष्टाचार " को केंद्र में रखकर लिखा गया है। समाज में शिक्षा को पैसे से तोला जा रहा है। जिसके पास पैसा है, वही उत्तीर्ण होता है चाहे वह प्रतिभाशाली हो या प्रतिभाशाली न हो। डॉ. शंकर शेष ने एक और द्रोणाचार्य नाटक में यथार्थ का चित्रण किया है समाज में वर्तमान समय में शैक्षणिक भ्रष्टाचार किसी न किसी रूप मे विद्यमान है।

इस विषय पर मैंने अपनी शोध निर्देशिका डॉ. संदेशा भावसार के साथ इस विषय पर चर्चा की और उनके साथ विचार विमर्श करने के तत्पश्चात् लघुतर शोध के लिए " एक और द्रोणाचार्य " नाटक का चयन किया है।

II. शोध का उद्देश्य :

- ❖समाज में व्याप्त अर्थप्रधानता और भ्रष्टाचार को लक्षित करना |
- ❖मानव की अवसरवादिता और स्वार्थपूर्ण मानसिकता को उजागर करना ।
- ❖व्यवस्था के दमन चक्र और शोषण तंत्र का पर्दाफाश करना |
- ❖मध्यम वर्ग की निर्विकल्पिता और व्यवस्था की त्रिशंकु स्थिति पर प्रकाश डालना |
- ❖शैक्षणिक भ्रष्टाचार का भयावह चित्र प्रस्तुत करके समाज को जागरूक करना ।

सामाजिक प्रासंगिकता :

विद्यार्थियों को नकल में सहायता करना, व्यवस्था या सत्ताधारियों की कृपा पाने के लिए उनकी चापलूसी करना, शिक्षा केन्द्रो को व्यापार मानना, विद्यार्थियों की गुंडागर्दी, अध्यापकों की आदर्शहीनता, नौकरी के सुरक्षा के लिए तलवे चाटना

आदि अनेक भ्रष्टाचारी रुप इस शोध प्रबंध में व्यक्त किया जाएगा | शैक्षणिक भ्रष्टाचार के प्रति समाज को जागरूक करना इस शोध प्रबंध का विशेष योगदान है।

शोध विधि :

वर्तमान कालीन कथा एवं महाभारत कालीन कथा में व्याप्त साम्य और वैषम्य को स्थापित करने के लिए तुलनात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा | मुख्य शोध प्रविधि के अलावा शोध प्रविधि के रूप में विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक और मूल्यांकनात्मक प्रविधि का भी प्रयोग किया जाएगा |

शोध प्रबंध की रूपरेखा :

मैंने अध्ययन की सुविधानुसार " एक और द्रोणाचार्य : एक मूल्यांकन " विषय को तीन अध्याय में विभाजित किया है, जो निम्नलिखित है :

' प्रथम अध्याय ' - " **एक द्रोणाचार्य नाटक का कथ्य विश्लेषण** " | इस अध्याय में आर्थिक संकट, राजनीतिक सत्ता का दबाव, एक शिक्षक का प्रतिकार न करना, शैक्षणिक भ्रष्टाचार, जातिवाद, स्त्री शोषण, पथभ्रष्ट अखबार इत्यादि का विवेचन किया जायेगा।

' द्वितीय अध्याय ' - **" एक और द्रोणाचार्य नाटक में वर्तमान कथा एवं महाभारत कालीन कथा का समानांतर अध्ययन "** | इस अध्याय में **साम्य** में दोनों कथाओं में शिक्षक की आर्थिक स्थिति, शिक्षक पर सत्ता का दबाव, शिक्षक का प्रतिकार न करना, शैक्षणिक भ्रष्टाचार, स्त्रियों का शोषण, स्त्रियों की लालसा इत्यादि विषयों का मूल्यांकन किया जायेगा |

वैषम्य में पद प्राप्ति की मनसा , सत्ता का दबाव, पद का अधिकार, शिष्य की गवाही, शिष्य का त्याग, अनुराधा की हत्या इत्यादि विषयों का विवेचन किया जायेगा ।

' तृतीय अध्याय ' - **" एक और द्रोणाचार्य नाटक का शिल्प विधान |"** इस अध्याय में शब्द में देशज शब्द, अंग्रेजी शब्द, संस्कृत, अश्लील तथा अलंकार, मुहावरें, कहावतें, सुक्तियो का प्रयोग तथा नाटक की शैली में व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक , दृश्यात्मक, पूर्वदीप्ति, परोक्ष, संकेत, मनोवैज्ञानिक, अभिनयात्मक इत्यादि का विवेचन किया जायेगा ।

' उपसंहार ' में उपयुक्त विमर्श को निष्कर्षत: प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा, जो विभिन्न कथ्य विश्लेषणों और कथ्यों में समाहित साम्य और वैषम्य के आधार पर प्राप्त उपलब्धियों के सार का द्योतक है।

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : एक और द्रोणाचार्य नाटक का कथ्य विश्लेषण

प्रस्तावना
१.१ आर्थिक संकट
१.२ राजनीतिक सत्ता का दबाव
१.३ एक शिक्षक ने प्रतिकार नहीं किया
१.४ शैक्षणिक भ्रष्टाचार
१.५ जातिवाद
१.६ स्त्री शोषण
१.७ पथभ्रष्ट अखबार

द्वितीय अध्याय : वर्तमान कालीन कथा एवं महाभारत कालीन कथा में समानांतर अध्ययन

प्रस्तावना
२.१ साम्य
२.१.१ शिक्षक की आर्थिक स्थिति
२.१.२ शिक्षक पर सत्ता का दबाव
२.१.३ शिक्षक का प्रतिकार न करना
२.१.४ शैक्षणिक भ्रष्टाचार
२.१.५ स्त्री का शोषण
२. १. ६ स्त्रियों की लालसा

२.२ वैषम्य
२.२.१ पद का अधिकार
२.२.२ सत्ता का दबाव
२.२.३ शिष्य की गवाही
२.२.४ पद प्राप्ति की मनसा
२.२.५ शिष्य का त्याग

२.२.६ अनुराधा की हत्या

III. तृतीय अध्याय: एक और द्रोणाचार्य नाटक का शिल्प विधान

प्रस्तावना
३.१ भाषा
३.१.१ शब्द
३ १.१.१ देशज शब्द
३.१.१.२ अंग्रेजी शब्द
३.१.१.३ संस्कृत
३.१.१.४ अश्लील शब्द
३.१.२ मुहावरें
३.१.३ कहावतें
३.१.४ सुक्तियो का प्रयोग
३.१.५ अलंकार योजना

३.२ नाटक की शैली
३.२.१ व्यंग्यात्मक
३.२.२ वर्णनात्मक
३.२.३ संवादात्मक
३.२.४ दृश्यात्मक
३.२.५ पूर्वदीप्ति
३.२.६ परोक्ष
३.२.७ संकेत
३.२.८ मनोवैज्ञानिक
३.२.९ अभिनयात्मक
निष्कर्ष

उपसंहार
परिशिष्ट
परिशिष्ट
आधार ग्रन्थ

पुस्तक	रचयिता	संस्करण	प्रकाशक
एक और द्रोणाचार्य नाटक	डॉ शंकर शेष	२००७	परमेश्वरी प्रकाशन बी १०९, प्रीत बिहार दिल्ली- ११००

संदर्भ ग्रन्थ

[1] आधुनिक हिंदी नाटक भाषिक और संवादीय संरचना- डॉ गोविंद चातक
[2] डॉ. शंकर शेष का रचना संसार - डॉ नीना शर्मा
[3] डॉ. शंकर शेष के नाटकों में समसामयिकता - डॉ दिनेश कुमार कापाड़िया
[4] डॉ. शंकर शेष के नाटकों का अनुशीलन - डॉ हशमनीस मधुकर
[5] डॉ. शंकर शेष के नाटकों में संघर्ष चेतना - डॉ हेमंत कुकरेती
[6] डॉ. शंकरशेष का नाट्यशास्त्र -डॉ शीर्षत यशवंत
[7] डॉ. शंकरशेष के नाटको मे वस्तुविधान - डॉ लक्ष्मीनारायण लाल
[8] एक और द्रोणाचार्य तात्विक समीक्षा